पुस्तक समीक्षा

पुस्तकः **विज्ञान कैलेंडर**
लेखकः **डॉ0 कुष्ण कुमार मिश्र**
प्रकाशकः **विज्ञान प्रसार, विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग, ए–50, इंस्टीट्यूशनल एरिया, सेक्टर–62, नोएडा उत्तर प्रदेश–201309**
प्रथम संस्करणः 2013, पृष्ठः 405, मूल्यः रुपये 200

कैलेण्डर का उपयोग किसी वर्ष की तिथियों की जानकारी के लिए किया जाता हे। वर्ष में 365 या 366 दिन होते हैं जो 12 मासों के अन्तर्गत निबद्ध होते हैं। विज्ञान जगत में विभिन्न मासों की पहली, द्वितीय या तृतीय आदि तिथियों को कौन–कौन से आविष्कार हुए, कौन से तत्व ज्ञात किये गये, या कोई अन्य घटना घटी, उनकी संख्या निश्चित रूप से 365 या 366 न होकर इससे कहीं अधिक होगी क्योंकि एक ही तिथि को कई घटनाएँ हो सकती हैं।

तिथिवार ऐसा विवरण तैयार करना जटिल कार्य तो है, साथ ही उनकी प्रामाणिकता पर विशेष ध्यान रखना पड़ता है। डॉ0 कृष्णकुमार मिश्र उत्साही युवा विज्ञान लेखक हैं। इन्होंने विज्ञान कैलेण्डर तैयार करने की यह चुनौती सहर्ष स्वीकार की और विज्ञान प्रसार ने इस विज्ञान कैलेण्डर को पुस्तक रूप में प्रकाशित कर विज्ञान लोकप्रियकरण की दिशा में अपने उद्देश्यों में सबसे बड़े उद्देश्य की पूर्ति की है।

विज्ञान कैलेण्डर का आनन्द उसके पृष्ठों में प्रवेश कर सचित्र विवरणों को पढ़ने पर मिलेगा। भाषा अति सरल एवं ग्राह्य है। इसमें कुल कितनी प्रविष्टियाँ हैं इसकी गणना मैं नहीं कर पाया।

पुस्तक के विषय में लेखक डॉ0 कृष्णकुमार मिश्र की एक पंक्ति उद्धृत करना चाहूँगाः–

'यह विज्ञान के ऐतिहासिक घटनाक्रम पर आधारित ई–कैलेण्डर है जो पाठक को उस दिन की कुछ अहम वैज्ञानिक घटनाओं तथा उपलब्धियों की जानकारी देता है।'

पुस्तक बच्चों, युवाओं तथा बूढ़ों के लिए समान रूप से सूचनाप्रद है।

– डॉ0 शिवगोपाल मिश्र